संस्कार और प्रत्यय (Impressions and Ideas)

ह्यूम अनुभववादी दार्शनिक हैं| ह्यूम के दर्शन में अनुभववाद का चरम विकास संशयवाद के रूप में हुआ| अनुभववादी दर्शन की एक व्यवस्थित रूप रेखा जॉन लॉक ने प्रस्तुत किया था, जिसका पर्याप्त विकास बर्कले के दर्शन में मिलता है| ह्यूम की दृष्टि में लॉक के अनुभववाद का वास्तविक रूप बर्कले के दर्शन में मिलता है परंतु बर्कले ने भी बहुत बड़ी भूल की है| उन्होंने जड़ द्रव्य तो खंडन तो कर दिया , परंतु मन तथा ईश्वर जैसे आध्यात्मिक द्रव्य को स्वीकार कर लिया| ह्यूम ने माना कि जब अनुभव ही एकमात्र ज्ञान का साधन है और हमें अनुभव प्रत्ययों का ही होता है, तो फिर प्रत्ययों के अतिरिक्त अन्य किसी आध्यात्मिक द्रव्य को स्वीकार करने की आवश्यकता नहीं है| ह्यूम के अनुसार जिस प्रकार जड़ द्रव्य प्रत्ययों का समूह है, उसी प्रकार मन या आत्मा भी प्रत्ययों का समूह मात्र है| वे मानते हैं कि अनुभववादी होने के नाते हमें केवल उन्हीं बातों को मानना चाहिए जिनका कोई अनुभव हो|

एक सच्चे अनुभववादी होने के नाते ह्यूम ने उन सभी बातों अथवा वस्तुओं की सत्ता का खंडन किया जिनका अनुभव नहीं होता है| इसलिए उन्होंने आत्मा और ईश्वर का अस्तित्व स्वीकार नहीं किया, क्योंकि हमें इनका कोई इंद्रिय अनुभव नहीं है|

ह्यूम अनुभव को ही एकमात्र ज्ञान का साधन मानते हैं| उनके अनुसार संस्कार या संवेदन (Impression) और प्रत्यय (Idea) अनुभव के दो अंग हैं| अनुभव के रूप में यही दोनों हमारे मन में आते हैं| बाहरी जगत से या हमारे भीतर से जो अनुभव प्राप्त होते हैं; उन्हें ' संस्कार' या संवेदन कहते हैं और इन्हीं का जो क्षीण रूप हमारे मन में

रहता है उन्हें वे प्रत्यय कहते हैं| संस्कार अधिक स्पष्ट और तीव्र होता है और प्रत्यय अपेक्षाकृत कम तीव्र तथा अस्पष्ट होता है| जैसे संगीत सुनने के समय जो संस्कार या संवेदन होता है वह कुछ समय बाद इतना तीव्र और स्पष्ट नहीं रह जाता| संवेदन का यह रूप प्रत्यय कहलाता है| जिस वस्तु का संस्कार बनता है, उसी का प्रत्यय भी बनता है| संवेदन और प्रत्यय मन को प्राप्त होते हैं और यही दोनों वास्तविक होते हैं| इसके अतिरिक्त किसी वस्तु की वास्तविकता स्वीकार नहीं की जा सकती, क्योंकि वह अनुभववाद की सीमा में नहीं है| ह्यूम यह भी कहते हैं कि संस्कार और प्रत्यय के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं है| वे मात्र एक के बाद दूसरा घटित होते हैं अर्थात एक के बाद दूसरा आता है| ह्यूम अपने इसी अनुभव वादी सिद्धांत की आधार पर आत्मा, ईश्वर तथा कार्य कारण नियम की समीक्षा करते हैं और इन को अस्वीकार कर देते हैं| आत्मा की सत्ता के विषय में वे कहते हैं कि " अंतरदर्शन द्वारा जब हम अपने आपको जानने की चेष्टा करते हैं, हमें आत्मा जैसी किसी वस्तु का अनुभव नहीं हो| हमें केवल हर्ष, शोक, तनाव जैसे अलग-अलग संस्कारों (संवेदना) काफी अनुभव होता है, परंतु आत्मा का कोई संस्कार या संवेदन हमें नहीं मिलता|" इसी प्रकार ह्यूम ईश्वर के संस्कार को भी मन में नहीं पाते| बर्कले ने कहा था कि हमारे प्रत्ययों का एक कारण होना चाहिए, और वह कारण उन्होंने ईश्वर को माना| किंतु ह्यूम कार्य कारण संबंध में विश्वास नहीं करता, इसलिए प्रत्ययों के कारण की आवश्यकता भी स्वीकार नहीं करते| अर्थात कारण के रूप में ईश्वर की सत्ता को स्वीकार नहीं किया जा सकता| कार्य कारण सिद्धांत को अस्वीकार करने के पीछे ह्यूम का तर्क था कि हम केवल एक घटना को दूसरी घटना के बाद घटते हुए देखते हैं| दोनों घटनाओं के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं दिखाई देता| इस घटना को दूसरी घटना के बाद घटते देखकर हम यह नहीं कह सकते कि एक घटना दूसरे का कारण है या एक में दूसरे को जन्म देने की शक्ति है, क्योंकि किसी ऐसी शक्ति का हमें प्रत्यक्ष नहीं होता| इस प्रकार ह्यूम ने कार्य कारण के नियम का खंडन करके ज्ञान की संभावना को नष्ट कर दिया| इस प्रकार ह्यूम के

दर्शन में अनुभववाद का चरम निष्कर्ष संशयवाद के रूप में हुआ| ह्यूम के संशयवाद को जॉन लॉक के अनुभववाद का तार्किक परिणाम कहा जाता है|